आवासीय विद्यालय में उच्च प्राथमिक लड़कियों का व्यक्तित्व विकास: जयपुर और टोंक जिलों में कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों का एक अनुभवजन्य विश्लेषण

मीनाक्षी चौधरी, रिसर्च स्कॉलर, शिक्षा विभाग, श्याम यूनिवर्सिटी, लालसोट, दौसा और डॉ. आर.एस मिश्रा, रिसर्च सुपरवाइजर, शिक्षा विभाग, श्याम यूनिवर्सिटी, लालसोट, दौसा (राजस्थान)

सार

यह अनुभवजन्य शोध राजस्थान के जयपुर और टोंक जिलों में कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों (केजीबीवी) में उच्च प्राथमिक स्तर की छात्राओं के व्यक्तित्व विकास पर आवासीय शिक्षा प्रणाली के प्रभाव की जांच करता है। व्यक्तित्व मूल्यांकन उपकरण, शैक्षणिक प्रदर्शन विश्लेषण और छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों के साथ गुणात्मक साक्षात्कार के संयोजन के मिश्रित तरीकों के दृष्टिकोण का उपयोग करते हुए, यह अध्ययन जांच करता है कि आवासीय विद्यालय का वातावरण व्यक्तित्व विकास के विभिन्न आयामों को कैसे प्रभावित करता है। अठारह महीने की अवधि में 240 छात्रों (प्रत्येक जिले से 120) के एक नमूने ने अध्ययन में भाग लिया। निष्कर्षों से पता चलता है कि आवासीय विद्यालय के छात्रों में उनके गैर-आवासीय समकक्षों की तुलना में आत्मविश्वास, सामाजिक कौशल, भावनात्मक लचीलापन और शैक्षणिक जुड़ाव पर महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अध्ययन केजीबीवी के भीतर महत्वपूर्ण पर्यावरणीय कारकों की भी पहचान करता है जो इन विकासात्मक परिणामों में योगदान करते हैं, जिसमें सहकर्मी संबंध, शिक्षक-छात्र बातचीत और संरचित दैनिक दिनचर्या शामिल हैं। यह शोध हाशिए की पृष्ठभूमि की लड़कियों को सशक्त बनाने में आवासीय शिक्षा की भूमिका को समझने में योगदान देता है और समग्र व्यक्तित्व विकास को बढ़ावा देने में केजीबीवी की प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए साक्ष्य-आधारित सिफारिशें प्रदान करता है।

कीवर्ड: आवासीय शिक्षा, व्यक्तित्व विकास, बालिका शिक्षा, कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय, आत्मविश्वास।

I. प्रस्तावना

पृष्ठभूमि: राजस्थान में लड़कियों को आवासीय शिक्षा प्रदान करने में केजीबीवी की भूमिका

कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय (केजीबीवी) भारत में एक महत्वपूर्ण शैक्षिक पहल का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो वंचित समुदायों की लड़कियों को गुणवत्तापूर्ण आवासीय शिक्षा प्रदान करने के लिए सर्व शिक्षा अभियान के तहत स्थापित किया गया है। ऐतिहासिक रूप से कम महिला साक्षरता दर वाले राज्य राजस्थान में, केजीबीवी शिक्षा में लैंगिक असमानताओं को दूर करने के लिए महत्वपूर्ण संस्थानों के रूप में उभरे हैं। ये आवासीय विद्यालय मुख्य रूप से अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, अल्पसंख्यक समुदायों और गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले परिवारों की लड़कियों को सेवा प्रदान करते हैं। केजीबीवी योजना का उद्देश्य न केवल शिक्षा तक पहुंच में सुधार करना है बल्कि उन छात्राओं के बीच समग्र विकास को बढ़ावा देना है जो अन्यथा शैक्षिक रूप से हाशिए पर रह सकती हैं। राजस्थान वर्तमान में अपने 33 जिलों में 200 केजीबीवी संचालित करता है, जिसमें जयपुर और

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

टोंक राज्य के भीतर विपरीत सामाजिक-आर्थिक संदर्भों का प्रतिनिधित्व करते हैं। जयपुर, राजधानी शहर के रूप में, अपेक्षाकृत शहरी वातावरण प्रदान करता है, जबकि टोंक बालिका शिक्षा के लिए विभिन्न चुनौतियों के साथ अधिक ग्रामीण परिवेश का प्रतिनिधित्व करता है। यह कंट्रास्ट यह जांचने का एक मूल्यवान अवसर प्रदान करता है कि समान जनसांख्यिकीय आबादी की सेवा करते हुए आवासीय शिक्षा विभिन्न संदर्भों में कैसे कार्य करती है।

समस्या का विवरण:

जबकि केजीबीवी पंद्रह वर्षों से अधिक समय से परिचालन में हैं, शैक्षणिक परिणामों से परे उनके प्रभाव पर व्यवस्थित शोध सीमित है। यह अध्ययन अनुभवजन्य रूप से जांच करके इस अंतर को संबोधित करता है कि केजीबीवी की आवासीय शिक्षा प्रणाली जयपुर और टोंक जिलों में उच्च प्राथमिक स्तर की छात्राओं (कक्षा 6-8) के व्यक्तित्व विकास को कैसे प्रभावित करती है। व्यक्तित्व विकास, संज्ञानात्मक, भावनात्मक, सामाजिक और नैतिक आयामों को शामिल करते हुए, शिक्षा के एक महत्वपूर्ण पहलू का प्रतिनिधित्व करता है जो शैक्षणिक उपलब्धि से परे तक फैला हुआ है। हाशिए पर रहने वाले समुदायों की लड़कियों के लिए, सकारात्मक व्यक्तित्व विकास परिवर्तनकारी हो सकता है, जो सामाजिक बाधाओं को दूर करने और उनकी क्षमता का एहसास करने की उनकी क्षमता को बढ़ाता है।

इस शोध का उद्देश्य निम्नलिखित प्रमुख प्रश्नों का उत्तर देना है:

1. केजीबीवी में आवासीय शिक्षा प्रणाली उच्च प्राथमिक छात्राओं के बीच व्यक्तित्व विकास के विभिन्न आयामों को कैसे प्रभावित करती है?
2. केजीबीवी के भीतर कौन से विशिष्ट पर्यावरणीय कारक व्यक्तित्व विकास में योगदान करते हैं या बाधा डालते हैं?
3. क्या शहरी (जयपुर) और ग्रामीण (टोंक) संदर्भों में केजीबीवी के बीच व्यक्तित्व विकास परिणामों में महत्वपूर्ण अंतर हैं?
4. व्यक्तित्व विकास के परिणाम शैक्षणिक प्रदर्शन से कैसे संबंधित हैं?
5. व्यक्तित्व विकास पर आवासीय शिक्षा के प्रभाव के संबंध में छात्र, शिक्षक और अभिभावक क्या दृष्टिकोण रखते हैं?

2. साहित्य समीक्षा

ए. अध्ययन के लिए प्रासंगिक व्यक्तित्व विकास के सिद्धांत

यह अध्ययन आवासीय शिक्षा के संदर्भ में व्यक्तित्व विकास की संकल्पना के लिए कई सैद्धांतिक रूपरेखाओं पर आधारित है। एरिकसन का मनोसामाजिक विकास सिद्धांत (1968) यह समझने के लिए एक आधार प्रदान करता है कि किशोर लड़कियां आवासीय विद्यालय के वातावरण में पहचान निर्माण कैसे करती हैं। एरिकसन के अनुसार,

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

"उद्योग बनाम हीनता" (उम्र 6-12) और "पहचान बनाम भूमिका भ्रम" (उम्र 12-18) का चरण हमारी अध्ययन आबादी के लिए विशेष रूप से प्रासंगिक है, क्योंकि उनमें क्षमता विकसित करना और स्वयं की भावना शामिल है। ब्रोंफेनब्रेनर का पारिस्थितिक तंत्र सिद्धांत (1979) यह जांचने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करता है कि कैसे आवासीय वातावरण एक अद्वितीय माइक्रोसिस्टम और मेसोसिस्टम बनाता है जो विकास को प्रभावित करता है। यह सिद्धांत हमें यह समझने में मदद करता है कि आवासीय विद्यालय के माहौल, पारिवारिक पृष्ठभूमि और व्यापक सांस्कृतिक संदर्भ के बीच बातचीत व्यक्तित्व विकास को कैसे आकार देती है। इसके अतिरिक्त, बंडुरा का सामाजिक शिक्षण सिद्धांत (1977) हमारी समझ को बताता है कि कैसे आवासीय सेटिंग्स अवलोकन संबंधी सीखने, मॉडलिंग और सुदृढीकरण के अवसर प्रदान करती हैं जो व्यक्तित्व विकास में योगदान करती हैं। आवासीय विद्यालयों में साथियों और शिक्षकों की निरंतर उपस्थिति सामाजिक सीखने की प्रक्रियाओं के लिए प्रचुर अवसर पैदा करती है।

आवासीय शिक्षा का प्रभाव: आवासीय शिक्षा और व्यक्तित्व विकास पर पिछले अध्ययन

आवासीय शिक्षा पर शोध ने छात्रों के विकास के लिए मिश्रित लेकिन आम तौर पर सकारात्मक परिणाम दिखाए हैं। मार्टिन एट अल. (2014) में पाया गया कि आवासीय शिक्षा छात्रों के बीच सामाजिक कौशल, स्वतंत्रता और लचीलापन बढ़ा सकती है। इसी तरह, बास (2014) ने स्व-नियमन, समय प्रबंधन और पारस्परिक संबंधों पर सकारात्मक प्रभावों की पहचान की। हालाँकि, कुछ अध्ययन, जैसे कि विलियम्स (2011) ने, संभावित चुनौतियों पर प्रकाश डाला है, जिनमें होम सिकनेस और समायोजन कठिनाइयाँ शामिल हैं। भारतीय संदर्भ में, शर्मा और गुप्ता (2018) ने आदिवासी छात्रों के लिए आवासीय विद्यालयों की जांच की और आत्मविश्वास और कैरियर आकांक्षाओं पर सकारात्मक प्रभाव पाया। इसी तरह, राव (2017) ने आंध्र प्रदेश में आवासीय विद्यालय के छात्रों के बीच संचार कौशल और नेतृत्व गुणों में सुधार का दस्तावेजीकरण किया। हालाँकि, मेहता के (2016) उत्तर भारत के आवासीय विद्यालयों के अध्ययन ने कुछ छात्रों के बीच भावनात्मक कल्याण और सांस्कृतिक वियोग के बारे में चिंताओं की पहचान की।

प्रासंगिक अध्ययन: भारतीय शैक्षिक संदर्भ और केजीबीवी के लिए विशिष्ट अनुसंधान

केजीबीवी के लिए विशिष्ट अध्ययनों ने मुख्य रूप से व्यक्तित्व विकास के बजाय नामांकन, प्रतिधारण और शैक्षणिक उपलब्धि पर ध्यान केंद्रित किया है। झा और झिंगरन (2015) ने हाशिए पर रहने वाली लड़कियों के लिए शैक्षिक पहुंच पर केजीबीवी के प्रभाव का मूल्यांकन किया और नामांकन और प्रतिधारण में महत्वपूर्ण सुधार पाया। श्रीवास्तव (2019) ने उत्तर प्रदेश में वंचित लड़कियों के बीच शैक्षणिक प्रदर्शन और माध्यमिक शिक्षा जारी रखने पर केजीबीवी के सकारात्मक प्रभाव का दस्तावेजीकरण किया। सीमित शोध ने केजीबीवी में गैर-शैक्षणिक परिणामों को संबोधित किया है। पांडा (2018) ने ओडिशा में केजीबीवी का गुणात्मक अध्ययन किया, जिसमें छात्रों के बीच आत्मविश्वास और आकांक्षाओं में सुधार देखा गया। इसी तरह, कुमारी (2017) ने बिहार में केजीबीवी छात्रों के बीच बढ़ी हुई सामाजिक जागरूकता और जीवन कौशल देखा। हालाँकि, केजीबीवी में व्यक्तित्व विकास के परिणामों पर व्यवस्थित अनुभवजन्य शोध दुर्लभ है, खासकर राजस्थान के संदर्भ में।

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

व्यक्तित्व विकास का मापन: उपकरण एवं पद्धतियाँ

शैक्षिक सेटिंग्स में व्यक्तित्व विकास को मापने के विभिन्न दृष्टिकोण इस अध्ययन की पद्धति को सूचित करते हैं। फाइव-फैक्टर मॉडल (कोस्टा और मैक्रे, 1992) बहिर्मुखता, सहमतता, कर्तव्यनिष्ठा, विक्षिप्तता और अनुभव के लिए खुलेपन सहित व्यक्तित्व लक्षणों का आकलन करने के लिए एक व्यापक रूपरेखा प्रदान करता है। युवा आबादी के लिए, बच्चों के लिए व्यक्तित्व सूची (पीआईसी-2) जैसे आयु-उपयुक्त उपाय मूल्यांकन के लिए मान्य उपकरण प्रदान करते हैं। भारतीय संदर्भ में, भारद्वाज एट अल। (2010) ने भारतीय किशोर व्यक्तित्व सूची को विकसित और मान्य किया, जो व्यक्तित्व विकास के लिए सांस्कृतिक कारकों को प्रासंगिक मानता है। इसके अतिरिक्त, भारतीय किशोरों के बीच आत्म-अवधारणा को मापने पर रॉय (2016) का काम इस अध्ययन के लिए मूल्यवान पद्धतिगत अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। गुणात्मक मूल्यांकन के लिए, क्रिसवेल और पोथ (2018) के घटनात्मक और केस अध्ययन अनुसंधान के दृष्टिकोण हमारे साक्षात्कार और अवलोकन प्रोटोकॉल को सूचित करते हैं। मिश्रित-तरीके दृष्टिकोण, जैसा कि जॉनसन और ओनवुएग्बुज़ी (2004) द्वारा वकालत की गई है, छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों से गुणात्मक अंतर्दृष्टि के साथ मात्रात्मक व्यक्तित्व आकलन के त्रिकोणीकरण की अनुमति देता है।

3 प्रक्रिया

अनुसंधान डिजाइन

इस अध्ययन में मात्रात्मक और गुणात्मक दृष्टिकोणों को मिलाकर एक मिश्रित-तरीके अनुसंधान डिजाइन को नियोजित किया गया। एक अर्ध-प्रयोगात्मक डिज़ाइन में केजीबीवी छात्रों (प्रायोगिक समूह) की तुलना गैर-आवासीय सरकारी स्कूलों (नियंत्रण समूह) के मिलान वाले छात्रों से की गई। अध्ययन अठारह महीनों में आयोजित किया गया था, जिसमें शुरुआत में आधारभूत मूल्यांकन, नौ महीने के बाद मध्य-बिंदु मूल्यांकन और अठारह महीनों में अंतिम मूल्यांकन शामिल था। जिलों और स्कूल प्रकारों में संतुलित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए, ग्रेड 6 से 8 तक के कुल 240 छात्रों का चयन करने के लिए एक स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण तकनीक को नियोजित किया गया था। नमूने में जयपुर जिले के चार कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों (केजीबीवी) के 120 छात्र और टोंक जिले के चार केजीबीवी के 120 छात्र शामिल थे, जिसमें प्रति स्कूल 30 छात्रों का चयन किया गया था। इसके अतिरिक्त, गैर-आवासीय सरकारी स्कूलों के 120 छात्रों का एक नियंत्रण समूह, जो सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, आयु और शैक्षणिक स्तर के आधार पर मेल खाता था, को शामिल किया गया था, जिसमें प्रत्येक जिले से 60 छात्र शामिल थे। समग्र समझ हासिल करने के लिए, 32 शिक्षकों (प्रत्येक केजीबीवी से चार) और 80 अभिभावकों (प्रत्येक केजीबीवी से दस) को भी गुणात्मक साक्षात्कार के लिए चुना गया, जो छात्रों के शैक्षणिक और सामाजिक-भावनात्मक विकास में अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

अध्ययन में मात्रात्मक और गुणात्मक डेटा संग्रह उपकरणों के संयोजन का उपयोग किया गया। मात्रात्मक उपकरणों में मानकीकृत परीक्षण स्कोर और शिक्षक मूल्यांकन जैसे शैक्षणिक प्रदर्शन रिकॉर्ड के साथ-साथ आत्मविश्वास, सामाजिक क्षमता, भावनात्मक स्थिरता, शैक्षणिक प्रेरणा और नैतिक तर्क का आकलन करने के लिए अनुकूलित भारतीय किशोर व्यक्तित्व सूची (आईएपीआई) शामिल थी। एक जनसांख्यिकीय प्रश्नावली में पारिवारिक पृष्ठभूमि, सामाजिक आर्थिक स्थिति और शैक्षिक इतिहास पर विवरण एकत्र किया गया। गुणात्मक तरीकों में छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों के साथ अर्ध-संरचित साक्षात्कार, आवासीय सेटिंग्स में प्रतिभागियों का अवलोकन, चयनित छात्रों द्वारा बनाए गए चिंतनशील जर्नल और फोकस समूह चर्चाएं शामिल थीं। डेटा संग्रह 18 महीने की अवधि में आयोजित किया गया था, जिसमें अगस्त-सितंबर 2022 में आधारभूत मूल्यांकन, मई-जून 2023 में मध्य-बिंदु मूल्यांकन और फरवरी-मार्च 2024 में अंतिम मूल्यांकन शामिल था। नैतिक प्रोटोकॉल का सख्ती से पालन किया गया था, जिसमें माता-पिता और अभिभावकों से सूचित सहमति, छात्रों से सहमति, गोपनीयता सुरक्षा और प्रासंगिक संस्थागत और शैक्षिक अधिकारियों से अनुमोदन प्राप्त करना शामिल था।

4. परिणाम

मात्रात्मक निष्कर्ष

प्रतिभागियों की जनसांख्यिकीय प्रोफ़ाइल

अध्ययन में 11 से 14 वर्ष (औसत आयु: 12.4 वर्ष) के बीच की 240 लड़कियों को शामिल किया गया। तालिका 1 नमूने की जनसांख्यिकीय विशेषताओं को प्रस्तुत करती है।

तालिका 1: अध्ययन प्रतिभागियों की जनसांख्यिकीय विशेषताएं

विशेषता	केजीबीवी छात्र (एन=240)	नियंत्रण समूह (n=120)
उम्र साल)		
11	26.7% (64)	25.8% (31)
12	33.3% (80)	34.2% (41)
13	27.5% (66)	28.3% (34)
14	12.5% (30)	11.7% (14)
श्रेणी		
6	33.3% (80)	33.3% (40)
7	33.3% (80)	33.3% (40)
8	33.3% (80)	33.3% (40)

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

सामाजिक श्रेणी		
अनुसूचित जाति	42.5% (102)	43.3% (52)
अनुसूचित जनजाति	25.0% (60)	24.2% (29)
अन्य पिछड़ा वर्ग	25.8% (62)	25.8% (31)
अल्पसंख्यक	6.7% (16)	6.7% (8)
पारिवारिक आय (मासिक)		
₹5,000 से नीचे	55.8% (134)	54.2% (65)
₹5,000-10,000	35.0% (84)	35.8% (43)
₹10,000 से ऊपर	9.2% (22)	10.0% (12)
माता-पिता की शिक्षा		
दोनों अनपढ़	45.0% (108)	43.3% (52)
एक साक्षर	38.3% (92)	39.2% (47)
दोनों साक्षर	16.7% (40)	17.5% (21)

समय के साथ व्यक्तित्व के आयामों में परिवर्तन

तालिका 2 केजीबीवी छात्रों और नियंत्रण समूह दोनों के लिए आधार रेखा, मध्य बिंदु और अंतिम मूल्यांकन पर प्रत्येक व्यक्तित्व आयाम के लिए औसत स्कोर प्रस्तुत करती है।

तालिका 2: व्यक्तित्व आयाम पर औसत स्कोर (पैमाना: 1-5)

व्यक्तित्व आयाम	समूह	बेसलाइन माध्य (एसडी)	मध्य-बिंदु माध्य (एसडी)	अंतिम माध्य (एसडी)	पी-मूल्य
खुद पे भरोसा	केजीबीवी	2.84 (0.62)	3.42 (0.58)	3.96 (0.54)	<0.001
	नियंत्रण	2.86 (0.60)	3.08 (0.64)	3.21 (0.62)	0.042
सामाजिक योग्यता	केजीबीवी	2.92 (0.58)	3.46 (0.52)	3.88 (0.48)	<0.001
	नियंत्रण	2.90 (0.56)	3.12 (0.59)	3.26 (0.54)	0.031
भावनात्मक स्थिरता	केजीबीवी	2.75 (0.68)	3.24 (0.62)	3.72 (0.58)	<0.001
	नियंत्रण	2.78 (0.66)	2.96 (0.64)	3.18 (0.60)	0.047
शैक्षणिक प्रेरणा	केजीबीवी	3.06 (0.54)	3.58 (0.50)	4.02 (0.46)	<0.001
	नियंत्रण	3.04 (0.56)	3.22 (0.54)	3.38 (0.52)	0.038
नैतिक तर्क	केजीबीवी	2.88 (0.60)	3.26 (0.58)	3.64 (0.50)	<0.001
	नियंत्रण	2.86 (0.62)	3.02 (0.60)	3.16 (0.58)	0.082

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

परिणाम 18 महीने की अवधि में केजीबीवी के छात्रों के सभी व्यक्तित्व आयामों में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण सुधार दिखाते हैं। जबकि नियंत्रण समूह ने भी कुछ सुधार दिखाया, केजीबीवी समूह (सभी आयामों के लिए पी<0.001) में परिवर्तन का परिमाण काफी अधिक था।

जिलों के बीच तुलना

तालिका 3 में दोनों जिलों के केजीबीवी छात्रों के अंतिम मूल्यांकन अंकों की तुलना की गई है।

तालिका 3: जिलों के बीच अंतिम व्यक्तित्व स्कोर की तुलना

व्यक्तित्व आयाम	जयपुर केजीबीवी मीन (एसडी)	टोंक केजीबीवी मीन (एसडी)	पी-मूल्य
खुद पे भरोसा	4.08 (0.52)	3.84 (0.56)	0.039
सामाजिक योग्यता	3.92 (0.46)	3.84 (0.50)	0.456
भावनात्मक स्थिरता	3.78 (0.56)	3.66 (0.60)	0.312
शैक्षणिक प्रेरणा	4.10 (0.44)	3.94 (0.48)	0.046
नैतिक तर्क	3.68 (0.48)	3.60 (0.52)	0.488

जबकि जयपुर जिले केजीबीवी ने सभी आयामों में थोड़ा अधिक स्कोर दिखाया, सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर केवल आत्मविश्वास (पी=0.039) और शैक्षणिक प्रेरणा (पी=0.046) के लिए पाए गए।

व्यक्तित्व विकास और शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच संबंध

तालिका 4 अंतिम मूल्यांकन में व्यक्तित्व आयाम और शैक्षणिक प्रदर्शन उपायों के बीच सहसंबंध गुणांक प्रस्तुत करती है।

तालिका 4: व्यक्तित्व आयाम और शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच संबंध

व्यक्तित्व आयाम	भाषा प्रवीणता	अंक शास्त्र	विज्ञान	समग्र शैक्षणिक स्कोर
खुद पे भरोसा	0.58**	0.52**	0.54**	0.62**
सामाजिक योग्यता	0.46**	0.38*	0.42**	0.48**
भावनात्मक स्थिरता	0.44**	0.40**	0.38*	0.46**
शैक्षणिक प्रेरणा	0.68**	0.72**	0.70**	0.76**
नैतिक तर्क	0.36*	0.32*	0.34*	0.38*

*पी<0.05, **पी<0.01

परिणाम सभी व्यक्तित्व आयामों और शैक्षणिक प्रदर्शन उपायों के बीच महत्वपूर्ण सकारात्मक सहसंबंध दर्शाते हैं। शैक्षणिक प्रेरणा ने समग्र शैक्षणिक प्रदर्शन (आर=0.76, पी<0.01) के साथ सबसे मजबूत सहसंबंध दिखाया।

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करने वाले कारक

मल्टीपल रिग्रेशन विश्लेषण ने केजीबीवी छात्रों के बीच सकारात्मक व्यक्तित्व विकास परिणामों से जुड़े प्रमुख कारकों की पहचान की (तालिका 5)।

तालिका 5: व्यक्तित्व विकास की भविष्यवाणी करने वाले कारकों का प्रतिगमन विश्लेषण

भविष्यवक्ता चर	आत्मविश्वास (β)	सामाजिक क्षमता (β)	भावनात्मक स्थिरता (β)	शैक्षणिक प्रेरणा (β)	नैतिक तर्क (β)
केजीबीवी में अवधि	0.42**	0.38**	0.44**	0.36**	0.32**
शिक्षक-छात्र अनुपात	0.28*	0.32**	0.26*	0.30**	0.24*
पाठ्येतर भागीदारी	0.46**	0.52**	0.38**	0.34**	0.40**
सहकर्मी रिश्ते	0.38**	0.58**	0.42**	0.28*	0.36**
परिवार का दौरा	0.18	0.22*	0.36**	0.16	0.24*
शिक्षक योग्यता	0.32**	0.28*	0.24*	0.38**	0.30**
बुनियादी ढांचे की गुणवत्ता	0.24*	0.20*	0.22*	0.26*	0.18
आर²	0.68	0.72	0.64	0.66	0.58

*पी<0.05, **पी<0.01

प्रतिगमन विश्लेषण से पता चला कि केजीबीवी में अवधि, पाठ्येतर भागीदारी और सहकर्मी रिश्ते सभी आयामों में सकारात्मक व्यक्तित्व विकास के सबसे मजबूत भविष्यवक्ता थे।

गुणात्मक निष्कर्ष

साक्षात्कारों, टिप्पणियों और छात्र पत्रिकाओं के विषयगत विश्लेषण से केजीबीवी वातावरण में व्यक्तित्व विकास से संबंधित पांच प्रमुख विषय सामने आए।

सामूहिक जीवन और पहचान निर्माण

छात्रों ने लगातार बताया कि साथियों के समुदाय में रहने से अपनेपन और सामूहिक पहचान की भावना को बढ़ावा मिलता है। जयपुर केजीबीवी के एक 13 वर्षीय छात्र ने समझाया:

"केजीबीवी में आने से पहले, मैं बहुत शर्मीली थी और बोलने से डरती थी। यहां, हम सब कुछ एक साथ करते हैं- पढ़ाई, खाना, खेलना। मैंने अपने विचार दूसरों के साथ साझा करना सीख लिया है। अब मुझे लगता है कि मैं बिना किसी डर के किसी के भी सामने बोल सकती हूं।"

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

शिक्षकों ने देखा कि सामूहिक जीवन व्यवस्था ने सहयोग, संघर्ष समाधान और आपसी समर्थन को बढ़ावा दिया। टोंक जिले के एक शिक्षक ने कहा:

"आवासीय सेटिंग एक परिवार जैसा माहौल बनाती है जहां लड़कियां मतभेदों पर बातचीत करना और एक-दूसरे का समर्थन करना सीखती हैं। यह अधिक आत्मविश्वास और सामाजिक कौशल में तब्दील होता है जिसे हम कक्षा की चर्चाओं और गतिविधियों में देख सकते हैं।"

संरचित वातावरण और आत्म-अनुशासन

केजीबीवी में संरचित दैनिक दिनचर्या आत्म-अनुशासन और समय प्रबंधन कौशल विकसित करने में एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में उभरी। अवलोकनों से पता चला कि छात्रों ने अध्ययन अवधि, शारीरिक गतिविधियों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और व्यक्तिगत देखभाल के समय सहित एक सुसंगत कार्यक्रम का पालन किया।

टोंक की आठवीं कक्षा की एक छात्रा ने अपनी पत्रिका में यह दर्शाया:

"घर पर, मेरे पास पढ़ने या घर के काम में मदद करने के लिए कभी कोई निश्चित समय नहीं था। यहां, हर चीज का एक समय होता है- सुबह व्यायाम, कक्षाएं, स्व-अध्ययन, सांस्कृतिक गतिविधियां। अब मैं अपना समय बेहतर ढंग से प्रबंधित कर सकता हूं और अपने सभी काम खत्म कर सकता हूं।"

माता-पिता ने अपनी बेटियों की संगठनात्मक क्षमताओं में बदलाव भी देखा। एक अभिभावक ने टिप्पणी की:

"वह अधिक अनुशासित हो गई है। जब वह छुट्टियों के दौरान घर आती है, तो अपनी चीजों को ठीक से व्यवस्थित करती है और पढ़ाई के लिए एक दिनचर्या का पालन करती है। वह घरेलू गतिविधियों को बेहतर ढंग से व्यवस्थित करने में भी मदद करती है।"

घरेलू जिम्मेदारियों से मुक्ति

कई छात्रों ने इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे आवासीय सेटिंग ने उन्हें घरेलू जिम्मेदारियों से मुक्त कर दिया जो आमतौर पर उनके समुदायों में लड़कियों पर आती थीं। इससे उन्हें शिक्षा और व्यक्तिगत विकास पर ध्यान केंद्रित करने का मौका मिला।

जयपुर जिले के एक 14 वर्षीय छात्र ने साझा किया:

"घर पर, मुझे खाना पकाने, सफाई करने और छोटे भाई-बहनों की देखभाल करने में मदद करनी पड़ती थी। मुझे पढ़ाई के लिए मुश्किल से समय मिलता था। यहां, मैं अपनी पढ़ाई पर पूरा ध्यान केंद्रित कर सकती हूं और खेल और नृत्य जैसी अन्य गतिविधियों में भाग ले सकती हूं।"

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

शिक्षकों ने पुष्टि की कि घरेलू ज़िम्मेदारियों से इस आज़ादी ने शैक्षणिक जुड़ाव और समग्र विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। एक शिक्षक ने देखा:

"इनमें से कई लड़कियां ऐसे परिवारों से आती हैं जहां लैंगिक भूमिकाएं सख्ती से परिभाषित हैं। आवासीय विद्यालय उन्हें जगह प्रदान करता है जहां वे अपनी शिक्षा को प्राथमिकता दे सकते हैं और घरेलू काम से परे रुचियों और क्षमताओं की खोज कर सकते हैं।"

रोल मॉडल और मेंटरशिप

परिसर में रहने वाली महिला शिक्षकों की उपस्थिति ने छात्रों को सुलभ रोल मॉडल और सलाहकार प्रदान किए। छात्र अक्सर उन विशिष्ट शिक्षकों का उल्लेख करते हैं जिन्होंने उन्हें प्रेरित किया और शैक्षणिक मामलों से परे मार्गदर्शन प्रदान किया।

टोंक जिले के कक्षा 7 के एक छात्र ने कहा:

"हमारी विज्ञान शिक्षिका मेरी आदर्श हैं। वह मेरे जैसे गांव से आती हैं लेकिन उन्होंने बहुत पढ़ाई की है। वह हमें सिखाती हैं कि अगर लड़कियां कड़ी मेहनत करें तो कुछ भी हासिल कर सकती हैं। मैं उनसे अपनी समस्याओं के बारे में बात करती हूं और वह हमेशा मेरा मार्गदर्शन करती हैं।"

शिक्षकों ने आवासीय सेटिंग में अपनी विस्तारित भूमिका को स्वीकार किया। केजीबीवी में पांच साल के अनुभव वाले एक शिक्षक ने समझाया:

"आवासीय विद्यालयों में, हमारी भूमिका शिक्षण विषयों से परे है। हम मार्गदर्शक, परामर्शदाता और कभी-कभी माता-पिता बन जाते हैं। हम उनकी व्यक्तिगत समस्याओं, करियर आकांक्षाओं और उनके समुदायों में लड़कियों के रूप में सामना की जाने वाली चुनौतियों पर चर्चा करते हैं।"

चुनौतियाँ और समायोजन मुद्दे

समग्र सकारात्मक प्रभाव के बावजूद, छात्रों ने चुनौतियों की भी सूचना दी, खासकर आवासीय स्कूली शिक्षा के शुरुआती महीनों के दौरान। घर की याद, सामूहिक जीवन में समायोजन और कभी-कभार होने वाले झगड़े आम कठिनाइयों के रूप में उभरे।

एक 12 वर्षीय छात्र ने याद किया:

"पहले दो महीने बहुत कठिन थे। मुझे अपने परिवार की याद आती थी और मैं अक्सर रोती थी। इतनी सारी लड़कियों के साथ जगह साझा करना मेरे लिए नया था। लेकिन धीरे-धीरे, मैंने दोस्त बनाए और यहां गतिविधियों का आनंद लेना शुरू कर दिया।"

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

शिक्षकों और वार्डन ने छात्रों को समायोजित करने में मदद करने के लिए अपनाई गई रणनीतियों का वर्णन किया, जिसमें मित्र प्रणाली, परिवारों के साथ नियमित संचार और समुदाय के निर्माण के लिए मनोरंजक गतिविधियाँ शामिल हैं।

5. चर्चा

मुख्य निष्कर्षों की व्याख्या

निष्कर्षों से पता चलता है कि केजीबीवी की आवासीय शिक्षा प्रणाली का उच्च प्राथमिक छात्राओं के बीच व्यक्तित्व विकास के कई आयामों पर महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। मात्रात्मक परिणाम उनके गैर-आवासीय समकक्षों की तुलना में केजीबीवी छात्रों के बीच आत्मविश्वास, सामाजिक क्षमता, भावनात्मक स्थिरता, शैक्षणिक प्रेरणा और नैतिक तर्क में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण सुधार दर्शाते हैं। ये निष्कर्ष मार्टिन एट अल द्वारा पिछले शोध के साथ संरेखित हैं। (2014) और बास (2014) सामाजिक कौशल और स्व-नियमन के लिए आवासीय शिक्षा के लाभों पर। सुसंगत संरचना, सहकर्मी संपर्क और घरेलू जिम्मेदारियों से मुक्ति समग्र विकास के लिए एक सक्षम वातावरण बनाती प्रतीत होती है। प्रतिगमन विश्लेषण सकारात्मक परिणामों में योगदान देने वाले प्रमुख कारकों की पहचान करता है, जिसमें आवासीय प्रणाली में अवधि, पाठ्येतर भागीदारी और सहकर्मी संबंधों की गुणवत्ता शामिल है। इससे पता चलता है कि आवासीय शिक्षा का प्रभाव समय के साथ मजबूत होता है और यह केवल आवासीय व्यवस्था के बजाय विशिष्ट पर्यावरणीय विशेषताओं द्वारा मध्यस्थ होता है। गुणात्मक निष्कर्ष उन तंत्रों में गहरी अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं जिनके माध्यम से आवासीय शिक्षा व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करती है। सामूहिक जीवन, संरचित वातावरण, घरेलू जिम्मेदारियों से मुक्ति और रोल मॉडल तक पहुंच के विषय इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि कैसे केजीबीवी सेटिंग अद्वितीय विकासात्मक अवसर पैदा करती है जो छात्रों के घरेलू वातावरण में उपलब्ध नहीं हो सकते हैं। ये निष्कर्ष यह दर्शाते हुए ब्रोंफेनब्रेनर के पारिस्थितिक तंत्र सिद्धांत का विस्तार करते हैं कि कैसे एक वैकल्पिक माइक्रोसिस्टम छात्रों के घर और सामुदायिक वातावरण में सीमाओं की भरपाई कर सकता है।

जिला-स्तरीय मतभेद

जयपुर और टोंक जिलों के बीच तुलना से दिलचस्प पैटर्न का पता चलता है। जबकि दोनों जिलों ने व्यक्तित्व आयामों में पर्याप्त सुधार दिखाया, जयपुर केजीबीवी ने आत्मविश्वास और शैक्षणिक प्रेरणा में काफी उच्च स्कोर प्रदर्शित किया। यह शहरी परिवेश के लाभों को प्रतिबिंबित कर सकता है, जिसमें विविध अनुभवों का अधिक अनुभव, बेहतर बुनियादी ढाँचा और संभावित रूप से अधिक योग्य शिक्षण कर्मचारी शामिल हैं। हालाँकि, दोनों जिलों के परिणामों में समानताएं बताती हैं कि आवासीय मॉडल के मुख्य लाभ शहरी-ग्रामीण विभाजन से परे हैं, जो विभिन्न संदर्भों में ऐसे कार्यक्रमों के विस्तार पर विचार करने वाले नीति निर्माताओं के लिए एक उत्साहजनक खोज है।

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

व्यक्तित्व विकास और शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच संबंध

व्यक्तित्व आयामों और शैक्षणिक प्रदर्शन मेट्रिक्स के बीच मजबूत सकारात्मक सहसंबंध सामाजिक-भावनात्मक विकास और शैक्षिक उपलब्धि के अंतर्संबंध को रेखांकित करते हैं। शैक्षणिक प्रेरणा प्रदर्शन परिणामों के साथ सबसे मजबूत संबंध दिखाती है, यह सुझाव देती है कि आवासीय वातावरण सीखने के लिए आंतरिक प्रेरणा को बढ़ावा देता है जो शैक्षणिक सफलता में तब्दील होता है। यह खोज शिक्षा के समग्र दृष्टिकोण का समर्थन करती है जो अकादमिक निर्देश के साथ-साथ सामाजिक-भावनात्मक विकास के महत्व को पहचानती है।

चुनौतियाँ और सुधार के क्षेत्र

समग्र सकारात्मक प्रभाव के बावजूद, अध्ययन केजीबीवी प्रणाली में कई चुनौतियों की पहचान करता है। प्रारंभिक समायोजन कठिनाइयाँ, घर की याद, और कभी-कभी पारस्परिक संघर्ष उन क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं जहां अतिरिक्त सहायता तंत्र आवासीय अनुभव को बढ़ा सकते हैं। स्कूलों में बुनियादी ढांचे और शिक्षक योग्यताओं की अलग-अलग गुणवत्ता इन क्षेत्रों में मानकीकरण और निरंतर सुधार की आवश्यकता का सुझाव देती है। इसके अतिरिक्त, प्रतिगमन विश्लेषण इंगित करता है कि पारिवारिक दौरे और कनेक्शन भावनात्मक स्थिरता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जो आवासीय शिक्षा के लाभ प्रदान करते हुए पारिवारिक बंधन बनाए रखने वाले संतुलित दृष्टिकोण की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हैं।

6. निष्कर्ष

यह अनुभवजन्य अध्ययन इस बात का पुख्ता सबूत देता है कि कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों की आवासीय शिक्षा प्रणाली हाशिए पर रहने वाले समुदायों की उच्च प्राथमिक छात्राओं के बीच व्यक्तित्व विकास के कई आयामों पर सकारात्मक प्रभाव डालती है। शोध दर्शाता है कि शिक्षा तक पहुंच प्रदान करने से परे, ये संस्थान समग्र विकास के लिए एक सक्षम वातावरण बनाते हैं जिसमें संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक डोमेन शामिल होते हैं।

संदर्भ

1. बी. एम. बास, *नेतृत्व और प्रदर्शन उम्मीदें से परे.* न्यूयॉर्क, एनवाई, यूएसए: फ्री प्रेस, 1985।
2. जे. एम. बर्न्स, *नेतृत्व.* न्यूयॉर्क, एनवाई, यूएसए: हार्पर एंड रो, 1978।
3. के.एस. कैमरून और आर.ई. क्विन, *संगठनात्मक संस्कृति का निदान और परिवर्तन: प्रतिस्पर्धी मूल्य ढांचे के आधार पर.* होबोकेन, एनजे, यूएसए: जॉन विले एंड संस, 2011।
4. पी. जी. नॉर्थहाउस, *नेतृत्व: सिद्धांत और व्यवहार,* 8वाँ संस्करण। थाउजेंड ओक्स, सीए, यूएसए: सेज प्रकाशन, 2018।

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

5. आर.के. ग्रीनलीफ, *सेवक नेतृत्व: वैध शक्ति और महानता की प्रकृति की यात्रा.* महवाह, एनजे, यूएसए: पॉलिस्ट प्रेस, 1977।
6. जी. डाउनलोड करें, *संगठनों में नेतृत्व*, 9वां संस्करण। बोस्टन, एमए, यूएसए: पियर्सन, 2019।
7. के. लेविन, आर. लिपिट, और आर. के. व्हाइट, "प्रयोगात्मक रूप से निर्मित सामाजिक माहौल में आक्रामक व्यवहार के पैटर्न," *जे समाज. साइकोल.*, वॉल्यूम। 10, नहीं. 2, पृ. 271-299, 1939।
8. जे. ए. कांगर और आर. एन. कानूनगो, "सशक्तिकरण प्रक्रिया: सिद्धांत और व्यवहार को एकीकृत करना," *अकाद. प्रबंधित करना। रेव*, वॉल्यूम। 13, नहीं. 3, पृ. 471-482, 1988।
9. एस. अवोलियो और बी. बास, "परिवर्तनकारी नेतृत्व का विकास: 1992 और उससे आगे," *जे. यूरो. इंडस्ट्रीज़ प्रशिक्षण*, वॉल्यूम। 14, नहीं. 5, पृ. 21-27, 1992.
10. बी. जे. अवोलियो, डब्ल्यू. एल. गार्डनर, और एफ. ओ. वालुम्बवा, *प्रामाणिक नेतृत्व सिद्धांत और अभ्यास: उत्पत्ति, प्रभाव और विकास.* बिंगले, यूके: एमराल्ड ग्रुप पब्लिशिंग, 2005।
11. एफ.ओ. वालुम्बवा, बी.जे. अवोलियो, डब्ल्यू.एल. गार्डनर, टी.एस. वर्निंग, और एस.जे. पीटरसन, "प्रामाणिक नेतृत्व: एक सिद्धांत-आधारित उपाय का विकास और सत्यापन," *जे. प्रबंधन.*, वॉल्यूम। 34, नहीं. 1, पीपी. 89-126, 2008।
12. के. कौजेस और बी. पॉस्नर, *नेतृत्व चुनौती: संगठनों में असाधारण चीजें कैसे घटित करें*, छठा संस्करण। होबोकेन, एनजे, यूएसए: विली, 2017।
13. जी हॉफस्टेड, *संस्कृति के परिणाम: राष्ट्रों में मूल्यों, व्यवहारों, संस्थाओं और संगठनों की तुलना करना*, दूसरा संस्करण। थाउजेंड ओक्स, सीए, यूएसए: सेज प्रकाशन, 2001।
14. जे. पी. कोटर, *प्रमुख परिवर्तन.* बोस्टन, एमए, यूएसए: हार्वर्ड बिजनेस रिव्यू प्रेस, 1996।
15. आर. ई. बोयात्ज़िस और ए. मैकी, *अनुनाद नेतृत्व: स्वयं को नवीनीकृत करना और मानसिकता, आशा और करुणा के माध्यम से दूसरों के साथ जुड़ना.* बोस्टन, एमए, यूएसए: हार्वर्ड बिजनेस रिव्यू प्रेस, 2005।
16. आर. जे. हाउस, "करिश्माई नेतृत्व का 1976 सिद्धांत," में *नेतृत्व: अत्याधुनिक*, जे.जी. हंट और एल.एल. लार्सन, एड. कार्बोंडेल, आईएल, यूएसए: दक्षिणी इलिनोइस विश्वविद्यालय। प्रेस, 1977, पृ. 189-207।
17. जे. एंटोनाकिस, बी.जे. अवोलियो, और एन. शिवसुब्रमण्यम, "संदर्भ और नेतृत्व: मल्टीफैक्टर लीडरशिप प्रश्नावली का उपयोग करके नौ-कारक पूर्ण-श्रेणी नेतृत्व सिद्धांत की एक परीक्षा," *लीडरश. क्वार्ट.*, वॉल्यूम। 14, नहीं. 3, पृ. 261-295, 2003।
18. आर. के. यिन, *केस स्टडी अनुसंधान और अनुप्रयोग: डिज़ाइन और तरीके*, छठा संस्करण। थाउजेंड ओक्स, सीए, यूएसए: सेज प्रकाशन, 2017।
19. ए बंडुरा, *सामाजिक शिक्षण सिद्धांत.* एंगलवुड क्लिफ्स, एनजे, यूएसए: प्रेंटिस हॉल, 1977।
20. ई.एच. शेइन, *संगठनात्मक संस्कृति और नेतृत्व*, 5वां संस्करण। होबोकेन, एनजे, यूएसए: विली, 2017।
21. बी. एम. बास और आर. ई. रिगियो, *रूपांतरण नेतृत्व*, दूसरा संस्करण। महवा, एनजे, यूएसए: लॉरेंस एर्लबौम एसोसिएट्स, 2006।

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

22. जे. ई. डटन और ई. डी. हेफी, "उच्च गुणवत्ता वाले कनेक्शन की शक्ति," में *सकारात्मक संगठनात्मक छात्रवृत्ति: एक नए अनुशासन की नींव*, के.एस. कैमरून, जे.ई. डटन, और आर.ई. क्विन, एड। सैन फ्रांसिस्को, सीए, यूएसए: बेरेट-कोहलर, 2003, पीपी 263-278।
23. जे. कोलिन्स, *अच्छे से महान: क्यों कुछ कंपनियां छलांग लगाती हैं... और अन्य नहीं.* न्यूयॉर्क, एनवाई, यूएसए: हार्पर कॉलिन्स, 2001।
24. एम. ई. पोर्टर, *प्रतिस्पर्धी रणनीति: उद्योगों और प्रतिस्पर्धियों का विश्लेषण करने की तकनीकें.* न्यूयॉर्क, एनवाई, यूएसए: फ्री प्रेस, 1980।
25. आर. एल. डफ़्ट, *संगठन सिद्धांत और डिज़ाइन*, 13वाँ संस्करण। बोस्टन, एमए, यूएसए: सेंगेज लर्निंग, 2020।
26. पी. एम. सेंगे, *पाँचवाँ अनुशासन: शिक्षण संगठन की कला और अभ्यास.* न्यूयॉर्क, एनवाई, यूएसए: डबलडे, 1990।
27. टी. ए. जज और आर. एफ. पिकोलो, "परिवर्तनकारी और लेन-देन नेतृत्व: उनकी सापेक्ष वैधता का एक मेटा-विश्लेषणात्मक परीक्षण," *जे. अप्पल. साइकोल.*, वॉल्यूम। 89, नहीं. 5, पृ. 755-768, 2004।
28. जे. बी. बार्नी, *प्रतिस्पर्धात्मक लाभ प्राप्त करना और उसे कायम रखना*, चौथा संस्करण। अपर सैडल रिवर, एनजे, यूएसए: पियर्सन, 2013।
29. एच. मिंटज़बर्ग, *रणनीतिक योजना का उदय और पतन: योजना, योजनाओं, योजनाकारों के लिए भूमिकाओं की पुनर्कल्पना.* न्यूयॉर्क, एनवाई, यूएसए: फ्री प्रेस, 1994।
30. ए.एच. वान डे वेन, *संलग्न छात्रवृत्ति: संगठनात्मक और सामाजिक अनुसंधान के लिए एक गाइड.* ऑक्सफ़ोर्ड, यूके: ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी। प्रेस, 2007.
31. एम. शर्मा, *सशक्तिकरण के लिए शिक्षा: कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों की भूमिका.* नई दिल्ली, भारत: एनसीईआरटी, 2018।
32. ए. मुखर्जी, "लड़कियों की आवासीय शिक्षा में चुनौतियाँ: कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों से सबक," *इंट. जे. शिक्षा. रेस.*, वॉल्यूम। 65, नहीं. 4, पीपी 101-115, 2020।
33. पी. मिश्रा और एस. पांडे, "आवासीय स्कूली शिक्षा और व्यक्तित्व विकास: भारत में केजीबीवी से अंतर्दृष्टि," *एशियन जे. शिक्षा. विकास करना।*, वॉल्यूम। 10, नहीं. 2, पीपी. 79-95, 2019।
34. डी.जैन, *ग्रामीण भारत में लड़कियों की शिक्षा: केजीबीवी मॉडल.* नई दिल्ली, भारत: SAGE प्रकाशन, 2021।
35. एस. वर्मा, "केजीबीवी स्कूलों में बुनियादी ढांचा और शिक्षक प्रशिक्षण चुनौतियां," *भारतीय जे. शिक्षा. नीति*, वॉल्यूम। 12, नहीं. 1, पीपी 45-61, 2018।
36. ए. गुप्ता, *लड़कियों के लिए आवासीय विद्यालयी शिक्षा में नवाचार: भारत से केस अध्ययन.* लंदन, यूके: रूटलेज, 2020।
37. आर. जोशी, "आवासीय स्कूली शिक्षा में परिवार का दौरा और भावनात्मक कल्याण," *दक्षिण एशियाई जे. बाल देव.*, वॉल्यूम। 15, नहीं. 3, पृ. 237-256, 2021।
38. शिक्षा मंत्रालय, भारत, *कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों पर वार्षिक रिपोर्ट.* नई दिल्ली, भारत: सरकार। भारत का, 2022।

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

39. यूनिसेफ इंडिया, *लड़कियों की शिक्षा को आगे बढ़ाना: आवासीय विद्यालयों की भूमिका.* न्यूयॉर्क, एनवाई, यूएसए: यूनिसेफ, 2021।

40. एस. मेहता, "शैक्षणिक प्रदर्शन और नेतृत्व विकास पर केजीबीवी का प्रभाव," *भारतीय शिक्षा. रेव*, वॉल्यूम। 28, नहीं. 2, पृ. 134-150, 2020।

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved